भारत का राजकोषीय घाटा

प्रलिमि्स के लयि:

राजकोषीय घाटा, कें द्रीय बजट, सकल घरेलू उत्पाद (GDP), मुद्रास्फीति, मुद्रा का अवमूल्यन, भुगतान संतुलन।

मेन्स के लयि:

भारतीय अर्थव्यवस्था पर राजकोषीय घाटे का प्रभाव।

स्रोत: द हदि

चर्चा में क्यों?

हाल ही में 2023-24 के शुरूआती चार महीनों में कें द्र का राजकोषीय घाटा पूरे वर्ष के **लक्ष्य के 33.9% तक** पहुँच गया।

- कें द्रीय बजट में, सरकार ने चालू वति्त वर्ष में राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के **5.9%** तक लाने का अनुमान व्यक्त कयिा है।
- **वर्ष 2022-23 में राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 6.4%** था जबकि पहले इसका **अनुमान 6.71%** व्यक्त कयिा गया था।

राजकोषीय घाटा:

- **परचिय:**
  - **राजकोषीय घाटा सरकार के कुल व्यय और उसके कुल राजस्व (उधार को छोड़कर) के बीच का अंतर है।**
  - यह एक संकेतक है जो दर्शाता है कि सरकार को अपने कार्यों को वति्तपोषति करने के लयि कसि सीमा तक उधार लेना चाहयि और इसे देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के प्रतशित के रूप में व्यक्त कयिा जाता है।
- **उच्च और नमि्न FD:**
  - **उच्च राजकोषीय घाटे से** मुद्रास्फीति, मुद्रा का अवमूल्यन और ऋण बोझ में वृद्धि हो सकती है।
  - जबकि **नमि्न राजकोषीय घाटे को राजकोषीय अनुशासन और स्वस्थ अर्थव्यवस्था के सकारात्मक संकेत** के रूप में देखा जाता है।
- **राजकोषीय घाटे के सकारात्मक पहलू:**
  - **सरकारी व्यय में वृद्धि:** राजकोषीय घाटा सरकार को सार्वजनकि सेवाओं, बुनयिादी ढाँचे और अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर व्यय बढ़ाने में सक्षम बनाता है जो आर्थकि वकिास को प्रोत्साहति कर सकते हैं।
  - **सार्वजनकि नविेश का वति्तपोषण:** सरकार राजकोषीय घाटे के माध्यम से बुनयिादी ढाँचा/अवसंरचनात्मक परयिोजनाओं जैसे दीर्घकालकि नविेश का वति्तपोषण कर सकती है।
  - **रोज़गार सृजन:** सरकारी व्यय बढ़ने से रोज़गार सृजन हो सकता है, जो बेरोज़गारी को कम करने तथा जीवन स्तर को बढ़ाने में मदद कर सकता है।
- **राजकोषीय घाटे के नकारात्मक पहलू:**
  - **बढे हुए कर्ज़ का बोझ:** लगातार उच्च राजकोषीय घाटा सरकारी ऋण में वृद्धि को दर्शाता है, जो भवषि्य की पीढ़ियों पर कर्ज़ चुकाने का दबाव डालता है।
  - **मुद्रास्फीति का दबाव:** बड़े राजकोषीय घाटे से धन की आपूर्ति में वृद्धि और उच्च मुद्रास्फीति की स्थति उत्पन्न हो सकती है, जसिसे सामान्य जन की क्रय शक्ति क्षमता कम हो जाती है।
  - **नजिी नविेश में कमी:** सरकार को राजकोषीय घाटे को पूरा करने के लयि भारी उधार लेना पड़ सकता है, जसिसे ब्याज दरों में वृद्धि हो सकती है और नजिी क्षेत्र के लयि ऋण प्राप्त करना मुश्कलि हो सकता है, इस प्रकार नजिी नविेश बाहर हो सकता है।
  - **भुगतान संतुलन की समस्या:** यदि कोई देश बड़े राजकोषीय घाटे की स्थति से गुज़र रहा है, तो उसे वदिेशी स्रोतों से उधार लेना पड़ सकता है, जसिसे वदिेशी मुद्रा भंडार में कमी आ सकती है और भुगतान संतुलन पर दबाव पड़ सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

?????:

प्रश्न.क्या आप इस मत से सहमत हैं कि सकल घरेलू उत्पाद की स्थायी संवृद्धि तथा निम्न मुद्रास्फीति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में है? अपने तर्कों के समर्थन में कारण दीजिये। (2019)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-s-fiscal-deficit